आरती

साहिब सतगुरू जी की

जय सतगुरू देवा – दाता जय सतगुरू देवा
सब कुछ तुम पर अर्पण – २, करूं हर पल सेवा

१ जो ध्यावे सुख पावे, दुख मिटे तन का साहिबा –
वचन सुनत तम नासे – २, सब संशय मन का साहिबा –
२ मात पिता तुम मेरे, शरण पड़ी तुमरे साहिबा –
तुम बिन और ना दूजा – २, आस करूं मैं जिसकी साहिबा –
३ गुरू चरणामृत निर्मल, सब दोषक हारी साहिबा –
सब्द सुनत भ्रम नासे – २, सब बंधन टारे साहिबा –
४ तन मन धन सब अर्पण, गुरू चरणन कीजे साहिबा –
सतगुरू देव परम पद – २, मौक्ष गति लीजे साहिबा –
५ काम क्रौध मद्य लौभ, तृष्णा अति भारी साहिबा –
सुरत सब्द को देकर, सार सब्द को देकर, संत सब संहारें साहिबा –
६ ध्यानी योगी ज्ञानी, सब हरि गुण गावें साहिबा –
सब का सार बता कर – २, संत मार्ग लावें साहिबा –
७ मन माया निज घेरा, जीव बहे सारे साहिबा –
सुरत सब्द को देकर, सुरति जहाज चढ़ा कर, संत पल में तारें साहिबा –
८ संत बिन दान ना होवे, साहिब ब्ख़ान करें साहिबा –
संत बिन ज्ञान ना होवे, संत बिन मौक्ष ना होवे, यत्न बहुत कीने साहिबा –
९ दीन बन्धु दुख हर्ता, तुम रक्षक मेरे साहिबा –
विषय विकार मिटाओ – २, तुम दर्शक मेरे साहिबा –
१० सुरत कमल के दाता, तुम रक्षक मेरे साहिबा –
मौक्ष पद दिलाओ – २ , तुम कर्ता मेरे साहिबा –

जय सतगुरू देवा – दाता जय सतगुरू देवा
सब कुछ तुम पर अर्पण – २, करूं हर पल सेवा

—0—

साहिब सत्तनाम

भजन संग्रह

संस्करण – १

साहिब सत्तपुरूष जी की महिमां का गुणगान

सत्तपुरूष एक वृक्ष हैं, निरंझन उन के डाल।
तीन देव शाखें भईं, पात्त फूल संसार।।

भजन सूची (संग्रह)

क्रमः	संस्करण सारांश	पृष्ठ
१	अमृत सार	१
२	भूमिका	२
३	कर्ता पुरख़	३
४	वे नाम कहत हैं	४
५	अनमोल रत्न	५
६	चौथे राम	६
७	प्रस्तावना	७
८	संदेश	८
९	सहज सत्त मार्ग	९
१०	आत्म बंधन	१०

भजन साहिब जी के

क्रम		भजन	भाग	पृष्ठ
१	क	मैं आया तेरे दरबार	१	०९
२		सुमिरण	१	११
३		सुमिरण	२	१२
४		सुमिरण कैसे हो	१	१३
५		तुमको पता नहीं है क्या	१	१४
६		आठ पहर आराधिये	१	१५
७		जन्म जन्म से ढूंढ रही हूँ	१	१६
८		मुझे तूने साहिबा	१	१८
९		मैनें पाया तुझे तो मैं	१	१९
१०		मौ को कहां ढूंढयो बंदे	१	२०
११		जो बीत गई सो बात गई	१	२१
१२		मेरे साहिबा मेरे साहिबा	१	२२

क्रम	भजन	भाग	पृष्ठ
१३	तूं है मेरा पिता	१	२३
१४	मन मूर्ख रस्ता वेख के चल	१	२४
१५	तुझे क्या सुनाऊँ मेरे साहिबा	१	२५
१६	साहिबा आप जा निजधाम	१	२६
१७	ये तो देस पराया रे	१	२७
१८	सतनाम दा बीज तूं पा लै	१	२८
१६	साहिब की नज़रों ने समझा	१	२६
२०	भजो रे भैया सार सब्द की	१	३०
क	पायो जी मैनें राम रत्न धन	१	३१
२१	मेहरां वालिये मेहरां दी	१	३१
२२	दीन बंधु दीना नाथ	१	३२
२३	मैं नीवीं मेरा सतगुरू ऊँचा	१	३३
२४	सुनो रे मेरे निर्बल के	१	३४
क	हेरी मैं तो प्रेम दिवानी	१	३४
ख	साहिब जी तुम चदँन हम पानी	१	३५
ग	मन फूला–फूला फिरे जगत में	१	३६
२५	आदत बुरी सुधार लो तो हो गया	१	३७
२६	भजन बिन भूल पड़यो संसार	१	३८
२७	साहिब जी झाडू दिया है साथ	१	३६
२८	तूं डौर ते पतंग मैं तेरे संग संग	१	४१
२६	तेरे दर से मिली थी जो बातें	१	४४
क	हम बसें चाम के धाम	१	४४
३०	दात्तार मेरे प्यारे बस तेरा ही है	१	४५
३१	अनमोल रत्न	१	४६
३२	निरलम्भ राम महिमां	१	४७
३३	निरलम्भ राम महिमां	२	४८
३४	निरलम्भ राम महिमां	३	४६
३५	हम सब एक परमपुरूष	१	५०

साधकों द्वारा सतगुरू जी के प्रति भजन रूपी श्रद्धा सुमन

क भजन सूची (संग्रह)

क्रम	भजन	पृष्ठ
१	नाम जपन दा वेला ऐ	१
२	साहिब नाम जप ले प्यारे	२
३	भक्ति–भक्ति करत सब जगत	२
४	सतगुरूां दा प्यार तूं पा लै	३
५	सतनाम साहिब सतनाम	४
६	मोरा साहिब ही गाता जाये	५
७	आओ सारे सत्संग करिये	६
८	बहुत जन्म गंवायों रे	६
९	सांचा नाम सांचा नाम साहिब	७
१०	साहिब सतपुरूष मेरे	८
११	मेरा साहिब ही संग निभाता	९
१२	साहिब सतनाम उच्चारे चला जा	१०
१३	जमना मरना काल का खेला	११
१४	क्या महिमां क्या महिमां मेरे संत	१२
१५	साहिब के हम बच्चे सारे	१४

अमृत सार

हे जगत की प्यारी जीव आत्माओं,

आप तन और मन नहीं हो, आप सब तो मूलतः साहिब सत्तपुरूष जी के अंश हंसा ही हो । हे हंसो, हम एक ही मूल से आए हैं और उसी मूल में जा समाना ही (मौक्ष) मानव जीवन का मात्र एक लक्षय है । **यह महान ग्रंथ सब हंसों के लिए, सब हंसों के द्वारा सुरति सूं लिखा गया और सब हंसों को सुरति से ही समर्पित किया गया है।** मूलतः यह ग्रन्थ किसी एक संप्रदाए, मत्त व धर्म का ना हो के सभी जीव आत्माओं के कल्याण हेतु समर्पित है ।आज के इस आधुनिक युग में मानव समाज ने अत्यधिक भौतिक उन्नति तो कर ली, कहने को वह उन्नतशील मानव समाज ही का हिस्सा हो गया । परन्तु आज के समाज में मानव ने अपना संपूर्ण पतन ही कर डाला। भौतिकता की चकाचौंध में, 'मैं' के अहम में स्वार्थी बना मानव सब को संशय भरी दृष्टि् से देखता है। मां बाप और बच्चों के नातों में संशय, भाई बन्धु व मित्र सम्बधियों के नातों में संशय, यहां तक कि अपने जीवन साथी के साथ दिखावे का प्रेम, पर भीतर संशय ही संशय। इस संशय से भरी ज़िन्दगी में प्रेम प्रीत की भावना ही लुप्त हो गई।

यही स्वार्थ व संशय से भरा मानव समाज पूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर भी संशय और अहम को नहीं छोड़ता। अक्सर स्वार्थ सिद्धी करने में ही लगा रहता है तभी तो वह बारम्बार जन्म लेता है पर मौक्ष को नहीं पाता । कोई बिरला ही स्वार्थ रहित होकर संपूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर अपने मूल (मोक्ष) को पाता है। मानव की इस दुख भरी जन्म मरन की अवस्था से ना उभरने के कारण संपूर्ण संत्त समाज चिंतित व व्यथित और उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है। जगतमें संशय और स्वार्थ ना छोड़ना ही मानव के कष्टकारी आवागमण का कारण बनता है।

भूमिका

वे नाम कह रहे हैं, जो दात मैं जग जीवों को दे रहा हूं, इसे सार सब्द के नाम से जाना जाता है । संतों ने इस दात को सार सब्द, अक्का सब्द, विदेह नाम व मूल नाम से भी सम्बोधित किया है । सत्तपुरूष जी ने दास के तीन बार निजधाम जाने के बाद पहला सार सब्द सुरति से उत्पन्न व प्रदान किया । जो मेरे सतगुरू के दिए हुए सब्द से सर्वथा भिन्न है । दास की पहली निजधाम यात्रा के समय स्वंय सतपुरूष जी व चार महां संतों, साहिब कबीर जी, बाबा नानक जी, साहिब रवि दास जी और संत मीरां बाई जी ने मुझ आत्मिक शरीर 'हंसा' को अत्यंत ऊर्जा प्रदान की ।

निजधाम पहुंचने पर पहला संदेश जो सतपुरूष जी ने दिया कि किसी को भी जग में बुरा मत कहना । इस बीच में लगातार साहिब सतपुरूष जी से सुरति सूं गोष्ट्ठियां होती रहीं जिनमें वो सतपुरूष सत्ता का ज्ञान और जीव आत्मांओं को जगाने हेतु दास को प्रेरित करते रहे । दूसरे दिन प्रातः लगभग तीन बजे से कुछ पहले का समय था, सतपुरूष जी दास की कुटिया में प्रकट हुए और सुरति में ही पूछा कि क्या आप बुल्ले का कथन, ''रब दा कि पाना, ऐदरूं पुटना ते इधर लाना'' को समझते हो । मैनें बड़े श्रद्धा भाव युक्त हो के सुरति में कहा, बाहर की दौड़ छोड़ के अंदर की ओर जाना ही अपने प्रीयतम को पाना है। वह आनंदित मुद्रा में मन्द मन्द मुस्कान लिए हुए सतज्ञान समझाने उपरान्त अदृष्य हो गये।

तीसरे दिन तीन बजने को कुछ समय बाकी था, अभी बस मैं उठने ही वाला था, तभी सतपुरूष जी कुटिया में प्रकट हुए, एक अदभुत प्रकाशमयी आभायुक्त रोशनी से सारी कुटिया ज्योतिमय हो गई । सतपुरूष जी आलोकिक प्रकाशमयी आभायुक्त सुरति सूं सार सब्द उच्चारण करते हुए अदृष्य हो गये, यह सारी घटना दास के लेटे लेटे जाग्रत अवस्था में ही घटी। उनके दर्शन उपरांत उसी पल में उठ बैठा, सुरति से इस सार सब्द को ग्रहण किया। यह अदभुत और अनोखी अवर्णित घटना इस से पहले कभी नहीं घटी । ज्यादातर संतों के पास उनके सतगुरू का दिया हुआ ही सब्द होता है, सतपुरूष जी से सर्व प्रथम सार सब्द साहिब कबीर जी को ही मिला था। इस दास को ही केवल दो बार सार सब्द सीधे सतपुरूष जी से मिला ।

यह ग्रंथ सतपुरूष जी की देन है, उसी को ही कलमबद्ध किया गया है। सतपुरूष जी के द्वारा बार बार प्रेरित करने पर तथा उन्हीं के आदेश से दास जग जीवों को जगाने और

सतपुरूष सत्ता की महिमां का बखान कर रहा है। ये ग्ददी भी शुरू करने का आदेश और प्रेरणा सतपुरूष जी ने ही प्रदान की ।

कर्ता पुरख

'' ना मैं कर्त्ता – ना कोई कर्त्ता
जो किया साहिब किया – सोहि कारणहार
हम तो केवल दास हैं – साहिब ही तारनहार
जो कुछ करें – उनकी मोज है
जो भी होता – सब अच्छा होत है
साहिब ही करन – करावनहार
हम तो केवल दासा – उनके सेवादार
वो ही तारनहार – करावे भव से पार
वे नाम भी तो – उन्हीं का नाम है
उन्हीं से कर लो प्यार – उन्हीं से कर लो प्यार''

–0–

वे नाम कहत है :—

1 लिखावनहार कोई और है,
वे नाम है दास—दीन।
सतपुरूष सूं अमृत जब बरसे,
लेखनी बने हदीम ।।

2 करन करावनहार सतपुरूष हैं,
दास सतपुरूष आगे अधीन ।
वे नाम को सब कुछ सौंप कर,
परमहंस की महिमां दीन ।।

3 हम सब हंसा अमरपुर वृक्ष सूं आए,
निरंझन जिनके ढाल ।
सब हंसा पात फूल उस वृक्ष के,
खुशबू देना भूल निज काम ।।

4 वे नाम आया सतलोक सूं,
हर एक को दे पुकार ।
आओ चलें सतलोक को,
वे नाम देत पुकार ।।

—0—

अनमोल रतन

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

वे नाम ने सतपुरूष सूं दात है पाई,
जाके बल आत्म हंसा बन जाई।
ये मूल नाम सार सब्द कहाई,
लिखा ना जाई पड़ा ना जाई।
अक्का नाम वह दात कहलाई,
जाके बल हंसा निजघर जाई।
ता से पूर्ण मोक्ष हंसा पा जाई,
जन्म मरन की कैद मिट जाई।
बहुरि हंसा गर्भ वासा ना पाई,
सब हंसा संग रास रचाई।
अमर लोक बिन धरती पानी वासा पाई,
हर पल साहिब के दर्शन पाई।
यत्न सूं कोई ये दात ना पाई,
बिन सतगुरू कोई नांहि पाई ।

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

—0—

चोथे राम (सतपुरूष जी)

1 प्यारो सतपुरूष, चोथे राम दा की पाना ।
सार नाम मन सूं पुटना, सुरति में लाना।।

2 सार नाम सूं बड़, तारे लाखों जीव।
आत्म सूं हंसा करे, ले चले भव सागर तीर।
सतगुरू पास दात है आती, तारे तीन लोक सूं जीव।
आवागमन चक्र छूटे, पल में पावे पीव।।

3 सार नाम (सब्द) स्वाति बूंद सूं, जानों अति महान।
सीप स्वाति बूंद को, मोती करती।
सार नाम सूं सतपुरूष, करें आप समान।
छिन पल में संग ले चले, निजघर निजधाम।।

4 साहिब (चौथे राम) व्यापक, हर वस्तु समाना।
बिन प्रेम, ना मिले प्रमाणा।
जब ही प्रेम, सुरति में जागे ।
हर स्थान हर जीव में, इक वह ही लागे ।।

—0—

–प्रस्तावना–

✍ आध्यात्म की दुनियां, जब से सृष्टि् बनी है तभी से जिज्ञासु–जन इस दुनियां को जानने को उत्सुक हैं, वह दुनियां जिसे हम आध्यात्म या रूहानियत, जो सृष्टि्– रचियता को जानने की जिज्ञासा, उस रचियता को मानने या ना मानने वाले दोनों के कोतूहल का विषय रही । इतनी ढेर सारी मान्यतांए, धर्म रहनुमाओं, अवतारों, पैग़म्बरों जिनका वर्णन अलग–अलग धर्म–ग्रन्थों,शास्त्रों,उपनिषदों में असंख्य गिनती में विद्य्मान है, यह सारे आराध्य एक सीमा तक (निराकार–भगवान) की त्रिलोकि तक सीमित हैं । मगर हमारे संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' व अनेक संतों ने जिनमें संत कबीर साहिब जी, संत रविदास जी, संत दादू दयाल जी, संत पल्टु साहिब जी, संत दरिया साहिब जी, संत तुलसीदास हाथरस जी, संत ब्रह्मांनंद जी, संत मीरांबाई जी, बाबा नानक जी और वर्तमान के संत मधु साहिब जी आदि संतों ने उस परमपिता परमेश्वर को जिसे साहिब नाम से सम्बोधित किया, को इस निराकार की सीमा से उपर बताया है, जैसे कि सभी धर्मों के ग्रन्थ व पुस्तकें एकमत हैं कि ईश्वर एक है (गाड इज़ वन) और संतों अनुसार वो मालिक, ईश्वर, निराकार की सत्ता से अलग, मौक्ष–दाता, साहिब, परमपुरूष या सत्तपुरूष नाम से सम्बोधित किए गये । निराकार की भक्ति करने तक स्वर्ग (कुछ काल तक मुक्ति) और फिर जीवन, जबकि साहिब भक्ति से पूर्ण मुक़्ति अर्थात मौक्ष (गर्भ से सदा सदा के लिए छुटकारा) मिलता है। सहज सतमार्ग में सतगुरू की महिमां अपरम्पार है, साधक सतगुरू कृपा द्वारा ही मन माया को तज कर परमहंस की अवस्था को प्राप्त होता है। इसी कारण साहिब 'श्री वे नाम परमहंस जी' ने निज अनुभव द्वारा कलमबद्ध किये गये सभी भजनों और ग्रंथों को अपने सतगुरू 'श्री मधु जी' के चरणों में समर्पित किया है।

संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' उन्हीं साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान व प्रचार करते हैं। सतगुरू जी ने आध्यात्मिक व रूहानी सफ़रनामों के अनुभवों को भजनों के रूप में अपने 'साहिब सत्तपुरूष महिमां' के प्रथम एवम द्वित्य भजन संस्करणों में कलम बद्ध तो किया ही था, परन्तु इसके बाद के अनेकों अनुभवों और साहिब सत्तपुरूष सत्ता की महिमां और दात का वर्णन जिससे कि रूहानियत के प्रति जागरूक व इच्छुक जिज्ञासु जन इसका भरपूर लाभ उठा कर मौक्ष को प्राप्त हो सकें, इसका पूरा सारांश उन्होंने अपने इस ''साहिब सत्तपुरूष महिमां'' के तृत्य भजन संस्करण में भी 'साहिब सतपुरूष जी' की सुरति द्वारा बड़ा अदभुद वर्णन किया है, ताकि सम्पूर्ण मानव समाज इन

भजनों को पढ़ के साहिब महिमां को समझे, जाने और जन्म मरण के बंधन से मुक्त होके पूर्ण मौक्ष को प्राप्त हो सके।

—0—

संदेश

हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के वासी ।।
काल जाल के वश में पड़ कर, भूल गये अविनाषी।
यह है काल जाल का फंदा, काटे कोई परमहंस प्यारा।
सार सब्द की सुरति देकर, सब को करे न्यारा।
सुरति से हो आत्म चेतन, तभी कटे ये बंधन सारा।
बंधन छूटे निजघर जाये, बन जाये हंस प्यारा।
परमहंस की शरणी आकर, पावे परमपुरूष प्यारा।
यही है परम मुक्ति पद, सार नाम रस सारा।
पर कोई कोई ये पावे, सतगुरू का प्यारा।
तूं तो निजधाम सतलोक, बेग़मपुर का वासी था।
मूल सुरति रूप तेरा, हंसा रूप निराला।
काल जाल में आकर फंस गया, और फिरे बेहाल ।
तीन पाँच पच्चिस का पिंझरा, जहां पर पड़ा वश काल।
चल हंसा सत्तलोक, छोड़ ये संसारा।
मिल पूर्ण सतगुरू सूं पाओ, हंसा रूप न्यारा।
जहां जाये फिर ना आये, मुक्त देस हमारा।
वो ही निजघर मुक्ति देस, बेग़म पुर प्यारा।
ग्याहरवें द्वार अष्ट्म चक्र से, जब हों प्राण निकासा।
सतगुरू संग परमपुरूष के लोक, पल में जा समाता।
बहुरि ना भवसागर आता, सुरति में जा समाता।
फिर वह मोती भौग लगाता, गर्भ कबहु ना आता।
हंस बन हंसों के संग संग, परमानंद पा जाता।
हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के हम वासी सारे ।।

संदेश वाहक
परमहंस सतगुरू श्री वे हूं जी
सहज सतमार्ग

१ सहज सहज सब कहत हैं, सहज ना जाने कोए।
सहज से आत्म आई है, सहज कहावे सोए।
सहज सतगुरू जिन सहज से, सहज बीज पाया होए।
मूल सब्द से सहज बनो, सहज से मिलना होए।
सहज स्वांस है, सहज में बहता सोए।
सहज को पकड़ो, सहज बन जाओ।
सहज में सहज कहावे, साहिबन सोए।।

२ सगुण में अटके ज्ञानी, निर्गुण में भटके ध्यानी।
मध्य में सुन ली अनहद वाणी।
यह सब सतगुरू देत हैं, अमृत सब्द सुरति वाणी।।

३ सहज का बीज साहिब कबीर महान, स्वांसा सुरति 'वे नाम'।
दोनों मिल महां बीज हैं, साहिबन नाम मूल नाम।।

४ सतगुरू मिला तो सब मिला, खुल गया कुल्फ़ कवाड़ा।
पूर्ण सतगुरू कृपा सूं, पायो साहिबन प्यारा।।

५ जात धर्म से उपर है, सर्वोपरि सतगुरू नाम।
साहिबन का कैसा नाम, वे नाम ही साहिबन जान।।

६ सतगुरू बड़े साहिब से, प्यारे मत सोच विचार।

साहिब सिमरे सो वार है, सतगुरू सिमरे सो पार।।

—0—

आत्म बंधन (कुल्फ़ कवाड़ा)

१ औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जीवों को लगता बड़ा प्यारा।
यह भेद पूर्ण संत जानत हैं, होते जो साहिबन प्यारे।
सुरति आत्म बंध पड़ी हृदय में, लाखों जन्म से प्यारो।
आत्म परमात्म नहीं प्यारो, यह तो सतपुरूष का अंश प्यारा।
सार सब्द है कुँझी कुल्फ़ की, पूर्ण संत इसका रखवारा।
लाखों जन्म का बंधन टूटे, जब खुले कुल्फ़ कवाड़ा।
मन औंकार काल निरंझन एको, जिस दियो कुल्फ़ कवाड़ा।
सत्तपुरूष का अंश है आत्म, जाने पूर्ण सतगुरू प्यारा।
जब कोई पाता दात पारस सुरति की, खुलता कुल्फ़ कवाड़ा।
यह कार्य पूर्ण सतगुरू करता, होता जो साहिबन प्यारा।
साधक को झुकना जब आता, पल में खुल जाता कुल्फ़ कवाड़ा।
सुरति निरति मूल सब्द से, आत्म से बने हंसा प्यारी।
आत्म के सब बंधन टूटे, साधक गुरू संग पावे निजघर प्यारा।
अब टूटा औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जब मिला सतगुरू प्यारा।
ये भेद 'वे नाम जी' देते हैं, जिन पायो साहिबन प्यारा।।

२ आत्म अंश साहिबन की, ताला औंकार का जाने संत प्यारा।
ताला औंकार रूपी मन का, घट में बंध आत्म सुरति प्यारो।
सार सब्द कुँझी ताले की, खोले कोई पूर्ण संत प्यारा।
सुरति छूटे सब्द ईक करे निरति से, ऐसा सब्द हमारा।

आत्म से सब्द करे हंसा, 'वे नाम सब्द' साहिबन प्यारा।

—0—

सत सुरति से ओत प्रोत साहिब जी के भजन

भजन १

मैं आया तेरे दरबार, साहिब जी बैठे हैं
चरणों में शीष झुका, तेरा दामन थामा है – 2

१ तूं है आप ही जग का कर्ता, सारे रंग तूं इस में भरता
ये तेरी रहमत है – मैं आया तेरे –

२ आप हैं अमरलोक के स्वामी, सुर में बोलें अमृत वाणी
ये कैसी रहमत है – मैं आया तेरे –

३ तेरी वाणी ने मुझे जगाया, मैं भागा–भागा आया
ये कैसी रहमत है – मैं आया तेरे –

४ पल पल तेरे गुण गाऊँ, तेरे संग दौड़ा–दौड़ा आऊँ
ये मेरी विनती है – मैं आया तेरे –

५ तेरा रूप अति है प्यारा, इसे भूल ना जाऊँ मैं
मेरी सुरति ना इससे छूटे, ये दास की विनती है – मैं आया तेरे –

६ अमरपुर के सतगुरू वासी, वहीं इनका ढेरा है
मैं था अपराधी जन्म जन्म का, तूने अमृत वर्षा की – मैं आया तेरे –

७ पल पल मेरी सुरति तेरे, चरणों की ही दासी है
दुनियां ना समझे सत्त को, बस यही उदासी है – मैं आया तेरे –

८ मरने से डरते सब हैं, जीने की अभिलाषा है
मरना जब आ जाये, तब कयामत आती है – मैं आया तेरे –

६ मरने से कुछ नहीं खोता, मान लुटेरा है
जब मान की डोर कट जाए, तो सब मिल जाता है – मैं आया तेरे –

१० मान की डोरी कटने से, तृष्णा मिट जाती है
तृष्णा के जाते ही, मौत खो जाती है – मैं आया तेरे –

११ जीवित जब मरते हैं, भव जल से तरते हैं
अब आत्म ही रह जाती है, जो निजघर जाती है – मैं आया तेरे –

१२ निजघर को जो है जाता, मुक्ति मिल जाती है
बूंद मिले जब साग़र से, सागर ही कहलाती है – मैं आया तेरे –

१३ मधु सतगुरू मेरे प्यारे, यह उनकी रहमत है
मैं था पांव का ईक तिनका, तिनके को उभारा है – मैं आया तेरे –

१४ मेरे सतगुरू की है तनाव, जो सुरत से बांधी है
मेरी सुरति हर दम उनके, चरणों में रहती है – मैं आया तेरे –

१५ राखें या सर को काटें, ये उनकी मर्ज़ी है
मैनें सब कुछ उन पर छोड़ा, ये प्रीत पुरानी है – मैं आया तेरे –

मैं आया तेरे दरबार, साहिब जी बैठे हैं
चरणों में शीष झुका, तेरा दामन थामा है – 2

—0—

भजन २ (भाग १)
सुमिरण

जय राम जय राम जय राम जी – २
सांचा नाम सांचा नाम तेरो नाम जी – २

१ तुझ में राम मुझ में राम सब में राम जी – २
जय राम जय राम जय राम जी – २

२ तेरो नाम तेरो नाम प्यारा नाम जी – २
जय राम जय राम जय राम जी – २

३ उपर राम नीचे राम सब में राम जी – २
जय राम जय राम जय राम जी – २

४ मेरे राम तेरे राम सब के राम जी – २
जय राम जय राम जय राम जी – २

५ चौथे राम निरलम्भ राम तेरो नाम जी – २
जय राम जय राम जय राम जी – २

६ गाओ राम सुनो राम प्यारा नाम जी – २
जय राम जय राम जय राम जी – २

७ सांचा नाम सांचा नाम सांचा नाम जी – २
जय राम जय राम जय राम जी – २

जय राम जय राम जय राम जी – २
सांचा नाम सांचा नाम तेरो नाम जी – २

–0–

''निरलम्भ राम'' / चौथे राम

एक राम दशरथ के राम, दूसरे राम घट घट के राम
तीसरे राम का सगल पसारा, चौथा राम सब से न्यारा

भजन ३ (भाग २)

सुमिरण साहिब जी

असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – २

१ असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे राम जी तेरे – २
असी तेरे तेरे तेरे राम जी, तेरे होए आं – २ – असी तेरे – २

२ असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे संत जी तेरे – २
असी तेरे तेरे तेरे संत जी, तेरे होए आं – २ – असी तेरे – २

३ असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे सतगुरू जी तेरे – २
असी तेरे तेरे सतगुरू जी, तेरे होए आं – २ – असी तेरे – २

४ असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे साहिब जी तेरे – २
असी तेरे तेरे तेरे साहिब जी, तेरे होए आं – २ – असी तेरे – २

५ असी तेरे तेरे तेरे, असी सतपुरूष जी तेरे – २
असी तेरे तेरे सतपुरूष जी, तेरे होए आं – २ – असी तेरे – २

६ असी तेरे तेरे तेरे, असी तेरे दाता जी तेरे – २
असी तेरे तेरे तेरे दाता जी, तेरे होए आं – २ – असी तेरे – २

७ तेरे चरणा दे नल लग के, संत जी तेरे होए आं – २
तेरे चरणा दे नल लग के, साहिब जी तेरे होए आं – २ – असी तेरे – २

८ तेरी जोत–च–मिल के साहिब जी, असी हुण तेरे होऐ आं – २
असी तेरे तेरे तेरे साहिब जी, तेरे होए आं – २ – असी तेरे – २

असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – २

–0–

भजन ४ (भाग ३)

सुमिरन कर लै ऐ बंदे
तेरी बीती जाती उम्र सतनाम बिना – २
तेरी बीती जाती उम्र साहिब नाम बिना – २

१ कूप नीर बिन, धेनु क्षीर बिन, धरती मेघ बिना – २
जैसे तरवर, फल बिन हीना, वैसे प्राणी सतनाम बिना – सुमिरन कर –

२ काम–क्रौध मद्य्–लोभ निहारो, छोड़ दो अब सब संतजना – २
कहे दास सुन मेरे साँईया, इस जग में नहीं कोई अपना – सुमिरन कर –

३ देह नैन बिन, चन्द रैन बिन, सुरत नाम बिना – २
जैसे ज्ञानी ज्ञानी वहीना, वैसे प्राणी सतनाम बिना – सुमिरन कर –

४ देह आंख बिन, मद्य् गज दाँत बिन, सुरत सब्द बिना – २
जैसे धरती पवन वहीना, वैसे प्राणी सतनाम बिना – सुमिरन कर –

५ देह प्राण बिन, पोप वास बिन, पंछी पंख बिना – २
जैसे सतलोक साहिब वहीना, वैसे प्राणी सतनाम बिना – सुमिरन कर –

सुमिरन कर लै ऐ बंदे
तेरी बीती जाती उम्र सतनाम बिना – २
तेरी बीती जाती उम्र साहिब नाम बिना – २

—0—

भजन ५

तुमको पता नहीं है क्या, किस हाल में हैं हम – २
जीते हैं कैसे जहां में, किस बात का है ग़म – २

१ क्या करें दुनियां में ऐसा – २ जिससे छूटे ग़म
सोये हो जन्मों–जन्मों से – २ ग़म होंगे कैसे कम – तुमको पता –

२ रचियता हो जग के कैसे – २ हर फूल में है ग़म
कांटों ने ऐसा घेरा – २ घुटने लगा है दम – तुमको पता –

३ मदहोश हो के जो करो – २ मिलता है उसमें ग़म
जन्मों–जन्मों की भूल से – २ ग़म होंगे कैसे कम – तुमको पता –

४ चित्त में भरे विकार हों – २ उनसे हैं सारे ग़म
निजघर को अपने जान लो – २ मिट जाऐं सारे ग़म – तुमको पता –

५ माया मन की मोहनी – २ सुर नर मुनी के संग
इस माया सब खाया – २ मन का है यह भी अंग – तुमको पता –

६ मन के जाल में हैं सभी – २ ऋषि मुनी हैं सारे तंग
जब तक ना पाओ सार रस – २ मुक्ति ना भटके संग – तुमको पता –

७ हर युग में निजधाम से – २ हो आते हैं संत कम
जो पूर्ण संत को पा ले – २ मुक्ति पाये अंग संग – तुमको पता –

तुमको पता नहीं है क्या, किस हाल में हैं हम – २
जीते हैं कैसे जहां में, किस बात का है ग़म – २

–0–

भजन ६

आठ पहर आराधिये – सुरत सब्द का ज्ञान
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २

१ गुरू को सिर पर राखिये – २ चलिये आज्ञा मांहि – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

२ कहे कबीर तां दास को – २ तीन लोक डर नांहि – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

३ दिल का मैहरमी कोई ना मिलया – २ जो मिलया सो ग़रजी़ – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

४ कहे कबीर आकाश फटा है – २ क्युं कर सीये दरजी – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

५ सत्त सब्द जे घट बसे – २ तां पाखण्ड विनाष – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

६ मन थिर होवे सार सब्द में – २ काल रहे झख मार – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

७ सार सब्द ह्रदय धरो – २ भयो पाप का नाश – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

८ जैसे चिंगी आग की – २ पड़ी पुराने घास – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

६ सार सब्द सतगुरू से पावे – २ सब शब्दों का सार – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

१० सार सब्द है बीज सरूपा – २ बिन सार ना भेद – २

दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

११ यह पिंजरा नहीं तेरा हंसा – २ कब जानेगा भेद रे – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

१२ हर सूं पूछूं भेद वै घर का – २ कोई ना बतावे भेद रे – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

१३ संत रे–दास मिले मोहे सतगुरू – २ दी सुरति मोहे बताये – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

१४ मैं मिली जाऊँ पाऐ पिया अपने – २ तब मेरी पीर बुझानी – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

१५ संत कबीर, रे दास और नानक – २ सुरत सब्द के ज्ञानी – २
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २ – आठ पहर –

आठ पहर आराधिये – सुरत सब्द का ज्ञान
दुख भण्झन सुरति नाम जी – २

–0–

भजन ७

जन्म–जन्म से ड़ूंढ रही हूँ – २ अपने ही घर का पता – २
कोई प्यारा ये बता दे – २ साहिब के घर का पता – २ – जन्म जन्म –

१ फूलों की लाली से पूछा – २ भेद लाली का है क्या – २
फूलों ने हंस कर कहा – लाली में है घर मेरा – २ – जन्म जन्म –

२ चाँद–तारों से भी पूछा – २ चाँदनी का राज़ क्या – २
चाँद–तारे खिल के बोलें – २ तेरे अंदर घर मेरा – २ – जन्म जन्म –

३ अनिल पंछी से भी पूछा – २ किस तरफ़ है घर तेरा – २
अनिल पंछी गा के बोला – २ प्रेम ही है घर मेरा – २ – जन्म जन्म –

४ एक पंडित से भी पूछा – २ सच्चे घर का दो पता – २
वो भी पोथी ले के बोला – २ कर्म धर्म है घर मेरा – २ – जन्म जन्म –

५ एक योगी से भी पूछा – २ सच्चे घर का दो पता – २
योगी मस्ती में यूं बोला – २ सुन्न में है घर मेरा – २ – जन्म जन्म –

६ एक गुरू से मैने पूछा – २ सतलोक का क्या पता – २ – जन्म जन्म –
गुरू जी श्रद्धा से यूं बोले – २ अनहद धुन में घर मेरा – २ – जन्म जन्म –

७ परमहंस से मैने पूछा – २ सत्त सब्द का क्या पता – २
संत यूं सुरति से बोले – २ कानों में ले लो पता – २ – जन्म जन्म –

८ उन्हीं से फ़िर मैने पूछा – २ किस जहां में घर मेरा – २
श्वांस श्वांस में नाम लो तुम – २ पल में पा लो ये पता – २ – जन्म जन्म –

६ परमहंस से मैने पूछा – 2 सतलोक का दो पता – २
परमहंस प्रीति से बोले – २ सर झुका कर लो पता – २ – जन्म जन्म –

१० श्रद्धा से फ़िर मैने पूछा – २ प्रेम घर का क्या पता – २
परमहंस उल्लास में बोले – २ प्रेम घर घट में तेरे – २ – जन्म जन्म –

११ ये सुन कर फ़िर मैने पूछा – २ मुक़्ति का है राज़ क्या – २
मूल नाम जो गुप्त है – २ उसी में है सब सार – २ – जन्म जन्म –

१२ फ़िर से मैने उनसे पूछा – २ नाम में है मूल क्या – २
जब ये नाम हृदय भयो – २ कटे रोग संताप – २ – जन्म जन्म –

१३ फ़िर से मैने उनसे पूछा – २ तुझमें मुझमें भेद क्या – २
परमहंस हंस कर यूं बोले–२ कनिक–कटिक जल तरंग सा –२ –जन्म जन्म –

जन्म–जन्म से ढूंढ रही हूँ – २ अपने ही घर का पता – २
कोई प्यारा ये बता दे – २ साहिब के घर का पता – २ – जन्म जन्म –

–0–

भजन ८

मुझे तूने साहिबा, सब्द जो दिया है – २
तेरा शुक्रिया है – २, मुझे तूने साहिबा – २

१ ना मिलती अगर दी हुई दातार तेरी – २
तो क्या थी ज़माने में औक़ात मेरी
जो खाली था दामन – २ वो तूने भरा है – तेरा शुक्रिया है – २

२ मेरा नहीं तूं सभी का है दाता – २
सभी को सभी कुछ देता दिलाता
ये बंदा तो तेरे – २ सहारे जिया है – तेरा शुक्रिया है – २

३ मेरा भूल जाना तेरा ना भुलाना – २
तेरी रहमतों का कहां है ठिकाना
तेरी इस मुहोब्बत ने – २ पागल किया है – तेरा शुक्रिया है – २

४ हर बंदा इस जहां में सोया हुआ है – २
पता नहीं किस किस में खोया हुआ है
तुझे जो छुऐ वो ही – २ जागा हुआ है – तेरा शुक्रिया है – २

५ हमारे ही अंदर दिया जल रहा है – २
जो भटकों को मंज़िल पे लिए जा रहा है
सुरत कमल दिग – २ दरस तुम्हारा – तेरा शुक्रिया है – २

६ मेरा ही नहीं तूं है सतलोक दाता – २
जो पाये तुझे वह है सतलोक जाता
हमारे ही अंदर – २ तूं बस रहा है – तेरा शुक्रिया है – २

मुझे तूने साहिबा, जो दिया है – २
तेरा शुक्रिया है – २, मुझे तूने साहिबा – २

—0—

भजन ६

मैने पाया तुझे तो मैं तूं हो गया
तूने पाया मुझे तो तूं मैं हो गया – २

१ यह कैसी लगी तेरी मेरी सख़ी – २
तूं तूं ना रही मैं मैं ना रही – २
यह अंदर की बातें हैं अंदर रही,
मन को देखा ना भाला कहां खो गया – २ मैने पाया तुझे –

२ रात कटती नहीं दिन भी आता नहीं – २
चाँद तारों का योवन भी भाता नहीं – २
मैं क्या करूं कुछ भी भाता नहीं – २ मैने पाया तुझे –

३ गुरू ने मुझको ये क्या कर दिया – २
आँसू रूकते नहीं कुछ भी भाता नहीं – २
क्या करूं गुरू बिन जिया जाता नहीं – २ मैने पाया तुझे –

४ अंदर की दुनियां की धुन ने यह क्या कर दिया – २
मेरा जीना भी मरने में अटका दिया – २
क्या करूं धुण बिन कुछ भी भाता नहीं – २ मैने पाया तुझे –

५ सुरत लागी मेरी अब सुरत धुन में – २
आज्ञा चक्र का गुरू का जो दरस किया – २
साहिब दरस बिना कुछ भी भाता नहीं – २ मैने पाया तुझे –

६ गुरू के चरणों में सर को कटवा दिया – २
साहिब के दर्शन पल ही पल पा गया – २
मैं क्या बताऊँ मुझे क्या मिल गया – २ मैने पाया तुझे –

मैने पाया तुझे तो मैं तूं हो गया,
तूने पाया मुझे तो तूं मैं हो गया – २

–0–

भजन १०

मौ को कहां ढूंढयो बंदे, मैं तो तेरे पास में – २

१ ना मैं जल में ना मैं थल में, ना ही सुन्न आकाश में
ना तीर्थ में ना सूरत में, ना एकांत निवास में – २ मौ को कहां –

२ ना मंदिर में ना मस्जिद में, ना काशी कैलाश में
ना मैं जप में ना मैं तप में, ना मैं व्रत उपवास में – २ मौ को कहां –

३ कहे कबीर भेद लिया, पल में भेद लिखात
नहीं प्राण में नहीं पिण्ड में, ना नाभी के पासा में – २ मौ को कहां –

४ ना मैं त्रिकुटि भँवर–गुफ़ा में, नां नाभी के पास में
खोजी हुए तुरंत मिल जाऊँ, ईक पल की तालाश में – २ मौ को कहां –

५ मौ को कहां...भँवर–गुफ़ा (गगन–मंडल) में अनहद बाजे
साहिब (सतपुरूष) ना अनहद झँकार में – २ मौ को कहां –

६ आज्ञा चक्र आत्म तत्व का वासा
सतगुरू मिलन द्वार यहां – २ मौ को कहां –

७ ज्योति निरंझन सुन्न में पावे
सुन्न समाधि ध्याण में – २ मौ को कहां –

८ सात चक्र निरंकार का वासा
ईक्कीस लोक विस्तार में – 2 मौ को कहां –

६ सुरत–कमल सतगुरू संग पाओ
सुरत–सब्द के ध्याण में – २ मौ को कहां –

१० अष्टम–चक्र सतपुरूष का वासा
मिलता सतगुरू ध्याण में – २ मौ को कहां –

११ कहे कबीर साहिब को पायो
संत कृपा प्रसाद में – २ मौ को कहां –

मौ को कहां ढूंढयो बंदे, मैं तेरे पास में – २

–0–

भजन ११

जो बीत गई सो बात गई, पाया ना संत प्यारे को – २

१ खुद जीवन एक सितारा है, माना ये बेहद प्यारा है – २
जो डूब गया सो डूब गया, पाया ना दर्श प्यारे का – २
जो बीत गई...

२ जीवन तो अमृत प्याला था, तुमने तन मन दे डाला था – २
वह टूट गया तो टूट गया, जब संग मिला ना प्यारे का – २
जो बीत गई...

३ जो टूट गये वो कहां गये, पूछो उन टूटे तारों से – २
कब अंबर शोक मनाता है, उन टूटे तारों पर अपना – २
जो बीत गई...

४ जीवन में हैं संत एक कुसुम, हैं उन पर नित्य न्योछावर हम – २
हम उन को पाकर खिल बैठे, तब संत भी उन में समाते हैं – २
जो बीत गई...

५ मधुबन की छाती को देखो, कितनी कलियां हैं सूख गई – २
जो मुर्झाई फिर कहां मिली, कब मधुबन शोर मचाता है – २
जो बीत गई...

६ जो सच्चे साहिब के प्यारे हैं, कब रोते हैं चिल्लाते हैं – २
अपने हाथों से खुशी खुशी, माटी के दीप जलाते हैं – २
जो बीत गई...

७ मधुरालय का आंगन देखो, उन टूटे प्यालों को देखो – २
कितने प्याले गिर जाते हैं, फ़िर माटी में मिल जाते हैं – २
जो बीत गई...

८ जो गिरते हैं कब उठते हैं, उठने का ज़ोर लगाते हैं – २
जब साहिब एक सहारा मिले, वह फ़िर जीवित हो जाते हैं – २

जो बीत गई...

जो बीत गई सो बात गई, पाया ना संत प्यारे को – २

–0–

भजन १२

मेरे साहिबा – मेरे साहिबा
मेरे विधाता (के रंग विच रंग गये आं) – २

१ ये जग है ईक झूठा सपना – २
लगदा है बस (सब कुछ अपना) – २
झूठ–च–रूल के – २ तेनु भुल गये आं... मेरे साहिबा – २
२ तूं बैठा है मन विच मेरे – २
मैं बैठा हां (दिल विच तेरे) – २
ईक मिक हो के – २ आपा भुल गये आं... मेरे साहिबा – २
३ पत्ते पत्ते डाली डाली – २
तकदा हां (तेरी सूरत प्यारी) – २
रंगां दे रंग विच – २ तेनु पा लेया ऐ... मेरे साहिबा – २
४ अमरलोक विच रहंदा तूं है – २
सुरत सागर विच (बहंदा तूं है) – २
मौजां नूं तर के – २ तेनु पा लेया ऐ... मेरे साहिबा – २
५ संत है जग दा सच्चा वाली – २
सब जियां दे (दिल दा माली) – २
ऐन्हां नूं तक के – २ दिल खिल गया ऐ... मेरे साहिबा – २
६ वादा सी मेरा प्यार करांगा – २
उठदे बैहंदे (याद करांगा) – २
बुल्ले ने सच नूं – २ पा लेया ऐ... मेरे साहिबा – २
७ तूं जग दा ऐं सच्चा वाली – २
बिन तेरे है (सब कुछ खाली) – २
दिल विच मेरे – २ बस गयो ऐ... मेरे साहिबा – २
८ राम कृष्ण तों न्यारा तूं है – २
सब जियां दा (सहारा तूं है) – २
अंग संग तक के – २ आपा भुल गयो
९ आप परमहंस जग विच आया – २
सब हंसां नू आप जगाया – २

ऐन्हां नूं मिल के – २ साहिबा पा लेया ऐ... मेरे साहिबा – २

१० दुखिये वी दर तेरे आवन – २
आ के अपना (मान मिटावन) – २
मंगियां मुरादां नूं – २ पा जांदे ने... मेरे साहिबा – २

मेरे साहिबा – मेरे साहिबा
मेरे विधाता (के रंग विच रंग गये आं) – २

–0–

भजन १३

तूं है मेरा पिता, गुरू है तेरा पता – २

१ मेरे जीवन की डौरी तेरे हाथ में – २
बिन हाथों के उसको चलाता है तूं – २
कुछ ना कहते हुए सब कह जाता है तूं – २ तूं है मेरा

२ बिन आंखों के तूं है मेरा पिता – २
बिन हाथों के लिखता है जीवन कथा – २
कुछ ना बचता इन आंखों से तेरी पिता – २ तूं है मेरा

३ पत्ते पत्ते में तेरा लिखा है पता – २
हर फूल में मिलता है जलवा तेरा – २
बिन गुरू के नहीं मिलता है तेरा पता – २ तूं है मेरा

४ दी हैं आंखें हमें फिर भी अंधे है हम – २
उन आंखों से दिखता न जलवा तेरा – २
गुरू चाहे तो होता ये दीदार है – २ तूं है मेरा

५ हम हैं रहते सबूरी में मेरे पिता – २
तुझको जानूं तो होगा ये मेरा भला – २
गुरू के चरणों में मिलता है तेरा पता – २ तूं है मेरा

६ हे बंदे जीवन तेरा ये अनमोल है – २
तुम समझो इसे ये बेमोल है – २
मुक़्त होता नहीं बिन जाने पिता – २ तूं है मेरा

७ जो भी दिल से तुझे है बुलाता पिता – २
गुरू पूरे से तुझको है मिलता पता – २
बिन देखे ही दिखने लग जाता पिता – २ तूं है मेरा

८ गुरू की शरणी में आता जो ईन्सान है – २
गुरू के चरणों में बनता वो ईन्सान है – २
मुक़्ति दे दो मुझे भी हे मेरे पिता – २ तूं है मेरा

६ तुझको अपना बना के रूलाते प्रभु – २
बिन देखे ही दिखने लग जाते प्रभु – २
कर्म ऐसा करो मुझ पे मेरे पिता – २ तूं है मेरा

१० जो भी दिल से तुझे है बुलाता पिता – २
जैसा चाहो वही बन जाते पिता – २
हाथ मेरा भी थामो हे मेरे पिता – २ तूं है मेरा

११ जन्मों जन्मों के बंधन काटो मेरे – २
बिन दिए कुछ भी दर्श दिखा दो मुझे – २
मुझे अपना बना लो ऐ मेरे पिता – २ तूं है मेरा
१२ तुमको देखा था संतों ने इस नूर में – २
तुम तो रहते हो धड़कन की डौर में – २
बंद आंखों से दिखते हो कोहिनूर तुम – २ तूं है मेरा

१३ कंई कंई जन्मों से मिलता ना तेरा पता – २
बिन पते के भटकता ये मन है मेरा – २
मन को समझाने वाले का दे दो पता – २ तूं है मेरा

१४ गुरू संत बन आए दुनियां में तुम – २
राह दिखलाने दुनियां में भटकों को तुम – २
हम को भी सच्ची राह का दे दो पता – २ तूं है मेरा

१५ ये कायनात सारी है जलवा तेरा – २
इस में डूबो तो मिलता है तेरा पता – २
डूब जाते हैं जो तुझको पाते हैं वो – २ तूं है मेरा

१६ परमहंस बंदे के चोले में आते यहां – २
सच्ची राह सभी को दिखलाते यहां – २
जो भी मिलता इन्हें पा ही जाता पिता – २ तूं है मेरा

तूं है मेरा पिता, गुरू है तेरा पता – २

–0–

भजन १४

मन मूर्ख रस्ता वेख के चल, सतगुरू तों मिलदियां अखियां नी – २
जद चलना ऐ डिग पैना ऐ, ऐ अखियां कानू रखियां नी – २

१ ये माल खज़ाना पास तेरे – २ कद जाना ई ऐ साथ तेरे – २
ऐवें ही आसां रखियां नी – २ ऐ अखियां कानू – मन मूर्ख –

२ जो कुज वी जग विच दिसदा ऐ – २ सब काल दे अंदर वसदा ऐ – २
ये काल जाल है जग अंदर – २ मानुष तन नूं भरमांदा ऐ – मन मूर्ख –
३ मंदिरा विच निस दिन जाना ऐ – २ मत्थे नूं तिलक लगाना ऐ – २
ऐदां नी मिलना साहिब तेनू – २ क्युं रूह नूं तूं भरमांदा ऐ – मन मूर्ख –

४ ग्रंथां नूं रटना पढ़ना ऐ – २ ऐनां नूं शीष निवाना ऐ – २
ईक संत ही साहिब मिलांदा ऐ – २ बिन संत ऐ भटका खांदा ऐ – मन मूर्ख –

५ जो कल करना सो अज कर लै – २ जो अज करना सो अब कर लै – २
इस कल और आज के धोखे में – २ तैनूं पैना पछताना ऐ – मन मूर्ख –

६ जे काल जाल तों बचना ई – २ इस मन नूं छउना पैना ई – २
ऐ मन संतां नूं देकर ही – २ सत वचन निभाने पैंदे ने – मन मूर्ख –

७ जे सुरत सब्द नूं पाना ई – २ सतगुरू नूं मिलना पैना ई – २
जै सुरत सब्द ना पा सके – २ तेरी रूह ने भटका खाना ई – मन मूर्ख –

८ जे निजघर नूं तूं जाना ई – २ मेरे साहिब नूं मिलना पैना ई – २
जे सार सब्द ना पा सके – २ नरकां विच रूह ने जाना ई – मन मूर्ख –

मन मूर्ख रस्ता वेख के चल, सतगुरू तों मिलदियां अखियां नी – २
जद चलना ऐ डिग पैना ऐ, ऐ अखियां कानू रखियां नी – २

–0–

भजन १५

तुझे क्या सुनाऊँ मेरे साहिबा, मेरे प्राण में तूं समा गया – २
तेरी ईक नज़र की है जुस्तजु, मैं तुझ ही तुझ में समा गया – तुझे क्या

१ मेरी हर नज़र में है तूं ही तूं, मेरे दिल जिगर में है तूं ही तूं – २

तेरा दास पन मुझे भा गया, मेरी प्यास और जगा गया – तुझे क्या

२ मैने जब से तुझको पाया है, मेरा हर कदम तेरा साया है – २
मैं उसको कैसे खो सकूं, जो सुरत सब्द में समाया है – तुझे क्या

३ तूं सारे जग से न्यारा है, बिन तेरे झूठ पसारा है – २
हर रूह में तूं समाया है, फल फूल भी संग लाया है – तुझे क्या

४ तूं सारे जग का वाली है, बिन तेरे सब कुछ खाली है – २
हर बीज में तूं समाया है, रंग रूप भी संग लाया है – तुझे क्या

५ हर श्वास में है तेरी ख़बर, मुझे सुबहो शाम की क्या ख़बर – २
मेरी शाम है तेरी जुस्तजु, मेरी सुबह ही तेरा दीदार है – तुझे क्या

६ हर जीव में है तेरी ख़बर, बिन जाने मिलती ना ये ख़बर – २
हर सुरति में है तूं ही तूं, हर आंख में तूं समाया है – तुझे क्या

७ तूं नैनों की कर कौठड़ी, पुतली का कर पलंग तूं – २
पलकों की चीक डाल कर, तूं साहिब को खुद रजा भी ले – तुझे क्या

८ अश्रुओं की माल बह चली, सुरति की माला से जा मिली – २
हर सुर में गावे तूं ही तूं, अब तूं ही तूं में समा भी जा – तुझे क्या

६ तेरा घर बड़ा ही दूर है, जैसे लम्बी एक खजूर है – २
जो चड़े सो चाखे प्रेम रस, जो गिरे सो चकनाचूर है – तुझे क्या

१० हर चीज़ जग में है भली, खिल जाओ तुम तो लगे भली – २
खिल जाओ जब तुम आ मिले, तुझ में ही तेरे साये हैं – तुझे क्या

११ ये सारा जग है इक चमन, यहां फूल कांटों का है मिलन – २
हर फूल सब को है भा रहा, कांटा भी संग बना रहा – तुझे क्या

१२ तूं सुरत कमल का दाता है, मोक्ष पद का विधाता है– २
चरणों में तेरे जो गिर पड़े, निजधाम का हो जाता है – तुझे क्या

तुझे क्या सुनाऊँ मेरे साहिबा, मेरे प्राण में तूं समा गया – २
तेरी ईक नज़र की है जुस्तजु, मैं तुझ ही तुझ में समा गया – तुझे क्या

–0–

भजन १६

साहिबा आप जा निजधाम बसो – २ मेरी उम्र गुज़र गई त्रिलोकि में – २

१ साहिबा जग में सभी जन सोये हैं – २ और सब कुछ अपना खोये हैं
मैं उन को बैठ जगाऊँगी – २ तूं क्षण भर रूप दिखा जाना – साहिबा आप

२ साहिबा पग़ पग़ संग निभा जाना – २ और सच्ची राह दिखा जाना
मैं तेरी जोत बन जाऊँगी – २ सूरज बन राह दिखा जाना – साहिबा आप

३ मैं तेरी आँख की ज्योती हूं – २ दुख सुख में एक सी होती हूं
दुख सुख तो संगी साथी हैं – २ ये राज़ हम्हें समझा जाना – साहिबा आप

४ मैनें लाखों जन्म बिताये हैं – २ पर किसी लेखे नहीं आये हैं
ये अंतिम जन्म अब मेरा है – २ निजधाम का ही तो फेरा है – साहिबा आप

५ मैनें पूर्ण सतगुरू पाया है – २ जो सुरत सब्द में समाया है
जो सुरत सब्द को पायेगा – २ बिन मांगे अमृत पायेगा – साहिबा आप

६ जो कुछ भी तुमने पाया है – २ वो माया की ही छाया है
आ मिल गुरू संग बैठ ज़रा – २ जे निजघर नूं तूं जाना ई – साहिबा आप

७ जो अष्ट्म चक्र जानेगा – २ मुक्ति की राह को पायेगा
गुरू चरणों में सर को झुकाना है–२ चरणों में ही जोत को पाना है–साहिबा
आप

८ जे निजघर गुरू संग जाओगे – २ मान सरोवर मनदे जाओगे
उस राह बिन अखां जाना ई – २ बिन मुख सब कुछ तूं कहना ई – साहिबा
आप

साहिबा आप जा निजधाम बसो – २ मेरी उम्र गुज़र गई त्रिलोकि में – २

–0–

भजन १७

ऐ तो देस पराया ऐ साहिबा ऐथे नंईयो रहना – २
ऐ तो देस बेग़ाना ऐ साहिबा असां छडी ओ जाना – २

१ ऐ तां दुखां दा साग़र ऐ – २ साहिबा असां दुखी ओ जाना – २ – ऐ तो देस
२ ऐ तां कांटों की बाड़ी ऐ – २ ऐथे असां जली ओ जाना – २ – ऐ तो देस
३ ऐ तां कागज़ की नैया ऐ – २ ऐथे असां गली ओ जाना – २ – ऐ तो देस
४ ऐ तां झाड़ और झाखड़ ऐ – २ ऐथे असां उलझी जाना – २ – ऐ तो देस
५ ऐ तां पागल खाना ऐ – २ ऐथे असां खोई ओ जाना – २ – ऐ तो देस
६ ऐ तां जंगल घना ऐ – २ ऐथे असां भटकी जाना – २ – ऐ तो देस
७ ऐ तां काल पसारा ऐ – २ ऐथे असां मरी ओ जाना – २ – ऐ तो देस
८ ऐ तां गहरा सागर ऐ – २ ऐथे असां डुबी ओ जाना – २ – ऐ तो देस
६ ऐ तां भरमों की नगरी ऐ – २ ऐथे असां भरमी जाना – २ – ऐ तो देस
१० ऐ तां झूठ पसारा ऐ – २ ऐथे असां ग़लत ओई जाना – २ – ऐ तो देस
११ अब रहमत जो बरसी ऐ – २ बाबुल संग उडी ओ जाना – २ – ऐ तो देस
१२ परमहंस नूं पाया ऐ – २ सत नूं असां पाई ओ जाना – २ – ऐ तो देस
१३ असां सुरति नूं पाया ऐ – २ साहिबा असां तरी ओ जाना – २ – ऐ तो देस
१४ असां ज्ञान नूं पाया ऐ – २ अमरपुर चली ओ जाना – २ – ऐ तो देस
१५ सच्चा देस हमारा ऐ – २ सतलोक असां चली ओ जाना – २ – ऐ तो देस
१६ बिन पैरां ओथे जाना ऐ – २ बिन हथां सब पाई ओ जाना – २ – ऐ तो देस
१७ बिन अखां सब दिस्सी ओ जाना–२ बिन कन्ना सब सुनी ओ जाना–२ – ऐ तो देस
१८ आत्म रूप च जाना ऐ – २ सुरति संग खोई ओ जाना – २ – ऐ तो देस

ऐ तो देस पराया ऐ साहिबा ऐथे नंईयो रहना – २
ऐ तो देस बेग़ाना ऐ साहिबा असां छडी ओ जाना – २

–0–

भजन १८

सतनाम दा बीज तूं पा लै, के आई रूत बीजने दी – २
बीज – बीज लो बीजने वालो, के आई रूत बीजने दी – २
सतनाम दा गुण तूं गा लै, के आई रूत बीजने दी – २

१ तूने लाखों जन्म बिताये, कितने रूप तूने बनाये – २
हर रूप में धोखे खाऐ, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज

२ तूने बरसों दुख उठाये, हर पल नये फूल लगाये – २
रंगों को तूने ना जाना, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
३ पीर पैग़म्बर जोगी यति, खोज ना पाये ईक वी रत्ति – २
किस किस को राह दिखाये, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
४ राम कृष्ण भी इस जग आये, कंई ढंगों से जीव जगाये – २
तूने सच्च की राह ना जानी, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
५ हर किरण है उसकी ज्योति, हर फूल में लाली उसकी – २
हर जीव में उसकी ज्योति, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
६ अमरपुर से तुम हो आये, आत्म जोत सतपुरूष की लाये – २
निजघर को तुम सब जानो, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
७ ये जग एक परख़ कसौटी, अच्छे बुरे सब की ज्योती – २
भूल में मत तूं रहना, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
८ मन हृदय भी तेरी कसौटी, दौड़ है उनकी बहुत ही छोटी – २
तूं है आत्म ज्योती, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
६ सुरत सब्द का बीज तूं पा लै, अपनी आग का ईंधन पा लै – २
पायेंगा अमृत ज्योती, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
१० ध्यान का सेतू सार सब्द, सांस सांस की माला बना लो – २
हंस बन पायेंगा मोती, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
११ सब जग भूला सुरत सब्द को, आया कहां से राज़ को पा लै – २
अष्ट्म चक्र में साहिब को पा लै, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज
१२ साहिब है वाली हर ज्योती का, वो ही है वाली सच्चे घर का – २
संतों से ये राज़ को पा लै, के आई रूत बीजने दी – २ सतनाम दा बीज

सतनाम दा बीज तूं पा लै, के आई रूत बीजने दी – २
बीज – बीज लो बीजने वालो, के आई रूत बीजने दी – २
सतनाम दा गुण तूं गा लै, के आई रूत बीजने दी – २

–0–

भजन १६

साहिब की नज़रों ने समझा, दास के काबिल मुझे – २
साहिब ने थामा मुझे, आ गया दरबार में – साहिब की नज़रों –

१ जी मुझे मंजूर है साहिब तेरा फैसला – २
भटकों की मंज़िल हूं मैं, मेरी मंज़िल आप हैं – साहिब की नज़रों –
२ क्युं मैं तूफां से डरूं मेरा साहिल आप हैं – २
कोई तूफानों से कह दे, मिल गये साहिब मुझे – साहिब की नज़रों –
३ टूटी नैया थी जो मेरी लग गया उस पार मैं – २
साहिब ने थामा मुझे, आ गया दरबार में – साहिब की नज़रों –
४ चश्में दिल से देख तूं क्या क्या तमाशे हो रहे – २

दिलस्तां क्या क्या है तेरे, दिल सताने के लिये – साहिब की नज़रों –
५ जब मैं था तब गुरू नहीं, अब गुरू हैं मैं नहीं – २
प्रेम गली अति सांकरी, तां में दो ना समाये – साहिब की नज़रों –
६ बिन बादल जहां बिजली चमके बिन सूरज उजियारा है – २
कहे दास रहनी हमारी, भूजे गुरू मुख प्यारा है – साहिब की नज़रों –
७ बिन सीप जहां मोती उपझे बिन मुख बैन उचारा है – २
ज्योती लगे ब्रह्मं जहां दरशे, आगे अग़म अपारा है – साहिब की नज़रों –
८ जो तो को कांटा बोये, वा को बोये फूल तूं – २
तां को फूल के फूल हैं, वा को है त्रिशूल – साहिब की नज़रों –

साहिब की नज़रों ने समझा, दास के काबिल मुझे – २
साहिब ने थामा मुझे, आ गया दरबार में – साहिब की नज़रों –

–0–

भजन २०

भजो रे भैया सार सब्द की लड़ी – २
ओ साहिबा – सार सब्द की लड़ी – २

१ जप तप साधन कुछ नहीं लागत – २ खर्चत नहीं गठड़ी – २ ओ साहिबा –

२ भूल गये तुम निजघर अपना – २ आंख में धूल पड़ी – २ ओ साहिबा –

३ संतत संपत सुख के कारण – २ जा से भूल पड़ी – २ ओ साहिबा –

४ कहत कबीर सुरत मन लागे – २ छोड़े मन की गली – २ ओ साहिबा –

५ जब से प्रीत लगी है तुम से – २ छूटे हर की गली – २ ओ साहिबा –

६ जब से पूर्ण संत को पायो – २ छूटी दुख की छड़ी – २ ओ साहिबा –

७ जब से मान सरोवर नहायो – २ छूटी मन की लड़ी – २ ओ साहिबा –

८ आठ अटा की अटारी मज़ारा – २ देखा पुरूष न्यारा – २ ओ साहिबा –

६ सुरत कमल में संत को पायो – २ धुल गई मैल मेरी – २ ओ साहिबा –

१० जब से तेरी चरण धूल पाई – २ खुल गई आंख मेरी – २ ओ साहिबा –

११ जो जन पूर्ण संत ना पावे – २ वा मुख धूल पड़ी – २ ओ साहिबा –

१२ वे नाम गुलाम जब आंख मेटे – २ आंख से आंख मिली – २ ओ साहिबा –

भजो रे भैया सार सब्द की लड़ी – २
ओ साहिबा – सार सब्द की लड़ी – २

–0–

भजन (संत मीरां बाई जी)

पायो जी मैनें राम रत्न धन पायो – २

१ वस्तु अमोलक दी मोरे सतगुरू – २ कृपा कर अपनायो – २ पायो जी –

२ जन्म जन्म की पूण्झी पाई – २ जग में सभी खोवायो – २ पायो जी –

३ खर्च ना फूटे चौर ना लूटे – २ दिन दिन बड़त सो पायो – २ पायो जी –

४ संत की नाव खेवेटिया सतगुरू – २ भवसागर तर आयो – २ पायो जी –

५ मीरां के प्रभु संत 'रे दासा' – २ हिरखर यश गायो – २ पायो जी –

६ सुरत कमल सतगुरू का वासा – २ चरणों में चित्त लायो – २ पायो जी –

७ सार सब्द में साहिब जी वासा – २ सुरति में ही समायो – २ पायो जी –

८ सच्चा घर है निजधाम हमारा – २ बिन सतगुय नहीं पायो – २ पायो जी –

६ परमहंस की शरणी पा लो – २ पल ही पल घर पायो – २ पायो जी –

पायो जी मैनें राम रत्न धन पायो – २

–0–

भजन २१

मेहरां वालिऐ – २ मेहरां दी बरसात कर दे
मेरे दिल विच गुरूां दा प्यार भर दे – २ मेहरां वालिऐ –

१ रिश्ते नाते झूठे बंधन – २ मुक्ति पा ले जीवन अंदर – २
दुखां तूं बचन दा राज़ दस दे – २ मेरे दिल विच – २ मेहरां वालिऐ –

२ नानक दुखिया सब संसार – २ ओ सुखिया जिस नाम आधारा – २
नाम जपन दा राज़ दस दे – २ मेरे दिल विच – २ मेहरां वालिऐ –

३ बाल अवस्था खेल गवायो – २ जब योवन तब मान गिना रे – २
साहिब नूं मिलन दा राज़ दस दे – २ मेरे दिल विच – २ मेहरां वालिऐ –

४ हर घट में है तेरा मंदिर – २ सारा धाम है इसदे अंदर – २
पूजा करन दा राज़ दस दे – २ मेरे दिल विच – २ मेहरां वालिऐ –

५ घट घट अंदर तेरा वासा – २ रूप है जिसदा साहिब जैसा – २
प्रीत करन दा राज़ दस दे – २ मेरे दिल विच – २ मेहरां वालिऐ –

६ सारा जग ये एक चमन है – २ सब से प्यारा यह गुलशन है – २
माली बनन दा राज़ दस दे – २ मेरे दिल विच – २ मेहरां वालिऐ –

मेहरां वालिऐ – २ मेहरां दी बरसात कर दे
मेरे दिल विच गुरूां दा प्यार भर दे – २ मेहरां वालिऐ –

–0–

भजन २२

दीन बंधु दीना नाथ – २ अब ना मोहे विसारिए – २

१ कण कण में है तेरा वास, फिर भी रहते बन के दास – २
तर के मुझ को तारिए – २ दीन बंधु दीना नाथ – २

२ ठुकरा दो या अपना लो, ठुकरा के भी अपना लो – २
जग से मुझ को निकालिए – २ दीन बंधु दीना नाथ – २

३ जग के सृजनहार बन के, संत और अवतार बन के – २
सब की ओर निहारिए – २ दीन बंधु दीना नाथ – २

४ रे दास, कबीर और नानक बन के, दीनों के भी दीन बन के – २
भवसागर से तारिए – २ दीन बंधु दीना नाथ – २

५ सेवा और सत्कार दे के – २ अपने मन का प्यार दे के – २
अवगुण मेरे विसारिए – २ दीन बंधु दीना नाथ – २

६ सेवा सिमरन प्यार दे के – २ लोभ मोह से त्याग दे के – २
अब मुझे संभालिए – २ दीन बंधु दीना नाथ – २

दीन बंधु दीना नाथ – २ अब ना मोहे विसारिए – २

–0–

भजन २३

मैं नीवीं मेरा सतगुरू ऊँचा – २ जिस नीवें नाल निभाई,
ऊँचे नाल मैं यारी लाई – मैं नीवीं मेरा – २

१ जे मैं देखां अवगुण अपने – २ कुज्ज ना पल्ले मेरे – २
सदके जावां मैं उच्चे नूं – २ जिस नीवें नाल निभाई – २ मैं नीवीं मेरा –

२ मैं कमली मैनूं ईल्म ना कोई – २ कदी ना यार मनाया – २
कीवें दसां ओदी वडियाई – २ जिस कागों हंस बनाया – २ मैं नीवीं मेरा –

३ डुब रई सी नैया मेरी – २ उत्तों रात हनेरी – २
डुबदी नैया तक के दाते – २ बांह पकड़ लई मेरी – २ मैं नीवीं मेरा –

४ उन मैं होई दाती तेरी – २ जीवन दा सुख पाया – २
तक के तैनू दिल विच मेरे – २ तेरा रूप समाया – २ मैं नीवीं मेरा –

५ रंग विच अपने रंग के मैनूं – २ तूने कर्म कमाया – २
बस गये हो मन विच मेरे – २ जीवें धूप च छाया – २ मैं नीवीं मेरा –

६ उन मैं होई पूरी पागल – २ कल नूं अज विच पाया – २
तक के तैनू अखां सावें – २ मन मेरा भर आया – २ मैं नीवीं मेरा –

७ उन होया ऐ सब कुछ मेरा – २ जद पलकां संग समाया – २
कुज्ज ना वेखां बिन मैं तेरे – २ सच्च विच सच्च समाया – २ मैं नीवीं मेरा –

८ उन मैं नाचूं संग में तेरे – २ हर थां तूं ही समाया – २
रंग विच तेरे रंग के आया – २ ईक तूं ही तूं ही गावां – २ मैं नीवीं मेरा –

मैं नीवीं मेरा सतगुरू ऊँचा – २ जिस नीवें नाल निभाई,
ऊँचे नाल मैं यारी लाई – मैं नीवीं मेरा – २

–0–

भजन २४

सुनो रे मेरे निर्बल के बल ''राम''– २

१ पिछली साख़ भरो संतों की – २ आज संवारो काम – २ सुनो रे मेरे –
२ जब लग गज बल अपनाया बरतयो–२ तिनक ना होयो काम – २ सुनो रे मेरे –
३ निर्बल हूं बल नाम तिहायो – २ आये आगे ना काम – २ सुनो रे मेरे –
४ जप बल तप बल और बहु बल – २ चौथा है बल राम – २ सुनो रे मेरे –
५ राम नाम के पासे सब बल – २ हारे को सतनाम – २ सुनो रे मेरे –
६ सार नाम कृपा से सब बल – २ हारे को सतनाम – २ सुनो रे मेरे –
७ जिन्हीं सिमरन ते अति सुख पायो – २ तारो तारन हार – २ सुनो रे मेरे –
८ फिरत फिरत कंई यु होए – २ अजे ना पायो राम – २ सुनो रे मेरे –
९ यह तन है ईक ख़ाक की ढेरी – २ बैठे इसमें राम – २ सुनो रे मेरे –
१० दुख सुख तो कर्मों के बंधन – २ भरो आप ही धाम – २ सुनो रे मेरे –
११ खुद ही बोयो खुद ही काटयो – २ चुप बैठे हैं राम – २ सुनो रे मेरे –
१२ बिन सतगुरू के नाम ना पायो – २ बिन नामे नहीं राम – २ सुनो रे मेरे –
१३ बिन नाम के सब जग झूठा – २ कब सिमरोगे राम – २ सुनो रे मेरे –
१४ सतनाम है सच्चा सौदा – २ बिन तोले लो राम – २ सुनो रे मेरे –
१५ कहत कबीर सुनो भाई साधो – २ नाम में ही निजधाम – २ सुनो रे मेरे –
१६ सतनाम को जान लिया तो – २ पहुंचोगे निजधाम – २ सुनो रे मेरे –

सुनो रे मेरे निर्बल के बल राम – २

''राम'' : एक राम दशरथ के राम, दूसरे राम घट घट के राम
तीसरे राम का सकल पसारा, चौथा राम सब से न्यारा

–0–

भजन (संत मीरां बाई जी)

हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरो दर्द ना जाने कोय – २

१ ना मैं जानूं आरती वंदन – २ ना पूजा की रीत – २ हे री मैं तो –

२ हार शिंगार तो झूठी – २ किस विधि मिलना होए – २ हे री मैं तो –

३ लोक लाज की ना सुधबुध मोहे – २ दर दर भटकूं खोए – २ हे री मैं तो –

४ मैं अनजानी प्रेम दिवानी – २ रीत ना जानूं कोए – २ हे री मैं तो –

५ मैं अति पागल और दिवानी – २ मरम ना जाने कोए – २ हे री मैं तो –

६ जन्म जन्म की मीरां प्यासी – २ प्यास बुझाए ना कोए – २ हे री मैं तो –

७ प्रेम नगर में रहनी हमारी – २ किस विधि मिलना होए – २ हे री मैं तो –

८ दिल का मैहरमी कोई ना मिलया – २ मर्म बताऐ जोए – २ हे री मैं तो –

६ 'रे संत' मुलतान चली आये – २ सुरति दान देहि मोहे – २ हे री मैं तो –

१० सुरत सब्द में साहिब जी वासा – २ 'रे संत' बतावें मोहे – २ हे री मैं तो –

११ सुरत महल सतगुरू का वासा – २ 'रे संत' दीखें मोहे – २ हे री मैं तो –

१२ मीरां के प्रभु 'संत रे दासा' – २ हिरखर यश गायो – २ हे री मैं तो –

१३ मैं मिली जाई पाए पिया अपने – २ पार लगाए जोहे – २ हे री मैं तो –

हे री मैं तो प्रेम दिवानी मेरो दर्द ना जाने कोय – २

–0–

भजन (संत रे दास जी)

साहिब जी तुम चँदन हम पानी – २
अब कैसे छूटे नाम रट लागी – २ साहिब जी –

१ साहिब जी तुम चँदन हम पानी – २
जाकि अंग बास समानी – २ साहिब जी –

२ साहिब जी तुम गन वन हम मोहरा – २
जैसे चित्तवन चाँद चकौरा – २ साहिब जी –

३ साहिब जी तुम दीपक हम बाती – २
जाकि जोत बड़े दिन राती – २ साहिब जी –

४ साहिब जी तुम मोती हम धागा – २
जैसे साना ही मिलत सुहागा – २ साहिब जी –

५ साहिब जी तुम सागर हम मीना – २
जैसे बूंद सिंधु समाना – २ साहिब जी –

६ साहिब जी तुम ज्योती हम काजल – २
जैसे सुन्न में काले बादल – २ साहिब जी –

७ साहिब जी तुम सुरति हम ध्याना २
जैसे सुन्न में नाम समाना – २ साहिब जी –

८ साहिब जी तुम स्वामी हम दासा – २
ऐसी भक्ति करे 'रे दासा' – २ साहिब जी –

साहिब जी तुम चँदन हम पानी – २
अब कैसे छूटे नाम रट लागी – २ साहिब जी –

–0–

भजन (साहिब कबीर जी)

मन फूला फूला फिरे जगत में कैसा नाता रे – २
कैसा नाता रे – ४ मन फूला फूला –

१ माता कहे ये पूत है मेरा – बहन कहे वीर मेरा रे – २ कैसा नाता रे – २

२ भाई कहे ये भुजा हमारी – नारी कहे नर मेरा रे – २ कैसा नाता रे – २
३ पेट पकड़ कर माता रोवे – बांह पकड़ कर भाई रे – २ कैसा नाता रे – २

४ लिपटी लिपटी तिरिया रोवे – हंस अकेला जाई रे – २ कैसा नाता रे – २

५ जब तक जीवे माता रोवे – बहन रोवे दस मासा रे – २ कैसा नाता रे – २

६ तेरहं दिन तक तिरिया रोवे – फिर करे घर वासा रे – २ कैसा नाता रे – २

७ चार गज़ी चरगाज़ी – चढ़ा काठ की घोड़ी रे – २ कैसा नाता रे – २

८ चारों कोने आग लगाई – फूंक दिया जैसे होरी रे – २ कैसा नाता रे – २

६ हाड जले जैसे लाकड़ी – केस जलें जैसे घासा रे – २ कैसा नाता रे – २

१० सोने की सी काया जल गई –कोई ना आया पासा रे – २ कैसा नाता रे – २

११ कहें संत सुनो भाई साधो – छोड़ो जग की आसा रे – २ कैसा नाता रे – २

१२ कहे दास सुनो भाई साधो – छोड़ो मन पर वासा रे – २ कैसा नाता रे – २

मन फूला फूला फिरे जगत में कैसा नाता रे – २
कैसा नाता रे – ४ मन फूला फूला –

–0–

भजन २५

आदत बुरी सुधार लो – तो हो गया भजन – २
आऐ कहां से और जाना कहां जान लो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –

१ भक्ति का राज़ जान लो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
२ अंदर की ओर चल पड़ो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
३ जाग्रत चित्त में तुम रहो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
४ मोत के राज़ को जान लो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
५ अपने आप को जान लो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
६ सुन्न में ध्यान जोड़ दो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
७ सुरत सब्द को पा लिया – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
८ सुरति में ध्यान जोड़ दो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
६ अनहद की धुण को पा लिया – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
१० सब को एक जान लो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
११ दानी का राज़ पा लिया – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
१२ हर एक में साहिब को जान लो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
१३ पूर्ण संत को जग में पा लिया – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
१४ सुरत कमल में गुरू को पा लिया – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
१५ गुरू के चरणों में सर को झुका लिया – तो हो गया भजन – आदत बुरी –

१६ मन के विचार खो गये – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
१७ बिन पग़ चलना आ गया – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
१८ बिन नैनन साहिब को देख लिया – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
१६ अंदर की जोत जग गई – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
२० बैठे ही बैठे साहिब को पा लिया – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
२१ सांसो की डौर छूटे ना – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
२२ साहिब जी तुझको भजने लगें – तो हो गया भजन – आदत बुरी –
२३ तुम और साहिब ईक मिक हो गये – तो हो गया भजन – आदत बुरी –

आदत बुरी सुधार लो – तो हो गया भजन – २
आऐ कहां से और जाना कहां जान लो – तो हो गया भजन – आदत बुरी –

–0–

भजन २६

भजन बिन भूला पड़यो संसार
साहिब जी भजन बिन भूला पड़यो संसार – २

१ चाहे पश्चिम जात पूर्व दिस – २
हृदय नहीं विचार साहिब जी – २ भजन बिन –

२ कंई बार मानस तन पायो – २
कंई जन्म चार योनि जायो, पायो ना मोक्ष द्वार साहिब जी – २ भजन बिन –

३ कंई जन्म नरकों में समायो – २
काल के हाथों अति दुख पायो, पायो ना जीवन सार साहिब जी – २ भजन बिन –

४ खाई मांस जियो चाहे – २
मंदिरा पी खोवो चाहे, मरत ना लागे बार साहिब जी – २ भजन बिन –

५ बांधे उर्द अरद सो लागे – २
भूले मुक़्त ग्वार साहिब जी – २ भजन बिन –

६ बैठे सिला समुंद तरन को – २
सो सब डूबन हार साहिब जी – २ भजन बिन –

७ सुरत सब्द बिन नहीं निस्तारा – २
कबहुं ना पहुंचे पार साहिब जी – २ भजन बिन –

८ सुख के कारण सहे दिरग दुख – २
बहे काल की धार साहिब जी – २ भजन बिन –

६ कंई जन्म जगत को बबीचया – २
इस माया की लार साहिब जी – २ भजन बिन –

१० कंई जन्म मन को सेवेयो – २
छूटे ना काल का जाल साहिब जी – २ भजन बिन –

११ कंई जन्म परमात्म सम होयो – २
सुन्न में पायो वास साहिब जी – २ भजन बिन –

१२ अनहद नाद को जो जन पायो – २
महां सुन्न में वासा पायो, राज योग मे जग पायो – भजन बिन –

भजन बिन भूला पड़यो संसार
साहिब जी भजन बिन भूला पड़यो संसार – २

(सुन्न : सहस्त्रार लोक), (महांसुन्न : सात लोक)

–0–

भजन २७

साहिब जी झाडू दिया है साथ, सांस सांस में साथ है तेरा – २
रहते हर दम साथ ओ साहिब जी रहते हर दम साथ – साहिब जी

१ इस झाडू का खेल है सारा – २
जो जाने सो पार, हर दम रहता साथ – ओ साहिब जी –

२ इस झाडू से प्रीत बड़ायो – सार सब्द में तुम चले जाओ – २
हरे वो सारे काम – २ – ओ साहिब जी –

३ जो भी आये संग में दास के – २

वो सब है बस पास, हर दम रहता साथ – ओ साहिब जी –

४ जिस को देखूं रूप है तेरा – २
समझे ना कोई साथ – २ – ओ साहिब जी –

५ अंदर बाहर तेरा पसारा – २
जो जाने सो पार – २ – ओ साहिब जी –

६ हर फूल और हर पत्ती में – २
तेरा है विस्तार – २ – ओ साहिब जी –

७ हर मस्तक में भरा है कचरा – २
ध्वणियां और विचार – २ – ओ साहिब जी –

८ हर हृदय को साफ़ करूंगा – २
झाड़ू है जब पास – २ – ओ साहिब जी –

६ हर दिल में संकल्प विकल्प हैं – २
ये झूठा बाज़ार – २ – ओ साहिब जी –

१० दास का झाड़ू ऐसा जग में – २
पल में करे जो साफ़ – २ – ओ साहिब जी –

११ हर मन में ईक चक्की चलती – २
कल और कल दो पाट – २ – ओ साहिब जी –

१२ एक काल जो बीत गया है – २
जिस में सपने हज़ार – २ – ओ साहिब जी –

१३ दूजा तल है आषा तृष्णा – २
जो है काल का जाल – २ – ओ साहिब जी –

१४ भूतकाल के सपने संग में – २
आशा तृष्णा साथ – २ – ओ साहिब जी –

१५ ध्यान किसी का कैसे लागे – २
हृदय में नहीं प्यास – २ – ओ साहिब जी –

१६ सुरति का ये झाडू साहिब का – २
पल में करे सब काज – २ – ओ साहिब जी –

१७ आसार मन को जान लेवो तुम – २
सब कुछ तेरे पास – २ – ओ साहिब जी –

१८ आशा तृष्णा मिट जावे तो – २
संत बसें तेरे साथ – २ – ओ साहिब जी –

१६ जब सतगुरू से प्रीत करो तो – २
साहिब भी तेरे पास – २ – ओ साहिब जी –

२० पग़ पग़ रहते संग साहिब जी – २
करते तेरे सब काज – २ – ओ साहिब जी –

२१ हर आत्म में दीप जलत है – २
बिन बाती बिन तेल – २ – ओ साहिब जी –

२२ जो कोई सुने आवाज़ दीप की – २
उसके पूर्ण भाग – २ – ओ साहिब जी –

२३ श्वांस श्वांस में ध्यान लगाओ – २
श्वांस प्रकटे साहिबा – २ – ओ साहिब जी –

२४ नाम है झाडू इस आत्म का – २
बिन नामे नहीं ठौर – २ – ओ साहिब जी –

साहिब जी झाडू दिया है साथ, सांस सांस में साथ है तेरा – २
रहते हर दम साथ ओ साहिब जी रहते हर दम साथ – साहिब जी

–0–

भजन २८

तूं डौर ते पतंग मैं तेरे संग संग जाऊँगी – २
अब टूटे ना ये बंधन तेरे संग समाऊँगी – २ तूं डौर ते –

१ मेरे सतगुरू की है तनाव – जो डौर से बांधी है – २
अब तीन हुऐ हैं ईक मिक – २ ये संग पुराना है
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

२ सतयुग में आकर – सत्त को जाना था – २
त्रेता में आकर हमने – २ अपने प्रेम को जाना था
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

३ द्वापर में हमने चार – भक़्ति गुण गाया था – २
वेदों में हूं मैं औंकार – २ ये कृष्ण ने गाया था
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

४ जब होश संभाला मैने – गीता को गाया था – २
ग्रंथ साहिब को सुन कर – २ मैने सर को झुकाया था
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

५ मस्जिद से बांग सुनकर – मेरी समझ में आया था – २
मेरा साहिब अति है दूर – २ उसकी याद दिलाता था
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

६ नादान था मैं ऐसा – वो सब कहते हैं – २
मुझे ख़बर थी मन की – २ मन के पार हो जाना है
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

७ मैने मन को ही ईश्वर जाना – यही वेद भी कहते हैं – २
पर सच्ची बात यही है – २ सतपुरूष को पाना है
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

८ मैने जब तन को छोड़ा – निरंकार को पाया था – २
फिर निरंकार को ही तो – २ कण कण में जाना था
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

६ मैने कंई जन्म से इसको – परमात्म जाना है – २
मुझे ख़बर नहीं थी ऐसी – २ इसे छोड़ना पैना है
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

१० मैं खोया सुद्ध बुद्ध अपनी – जब सैल असमानी की – २
सात सुन्न और महासुन्न – २ बिन पग़ से चल कर की

अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाऊँगी – २ तूं डौर ते –

११ स्वर्ग नर्क को देखा – सुख दुख की ख़बर मिली – २
बिन अखियाँ सब कुछ देखा – २ जो आत्म रूप में की
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाऊँगी – २ तूं डौर ते –
१२ तीन रूप अति हैं प्यारे – जो जोत सरूपी हैं – २
फिर अनहद झण्कार – २ ने अमृत वर्षा की
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

१३ शुद्ध ब्रह्म का लोक भी – जोत सरूपी है – २
उल्टा कुआँ गगन में – २ जलता चिराग़ है
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

१४ आठों पहर दिया जले – बिन बाती बिन तेल – २
जो कोई निरखे आवाज़ दीप की – २ उसके पूर्ण भाग
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

१५ जो कोई सुने आवाज़ दीप की – सुद्ध बुद्ध अपनी खोए – २
खुद को खोकर वो साथ – २ धुण में ही रम जाये
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग खो जाये – २ तूं डौर ते –

१६ सभी संत यही कहें – अंदर में देखो आप – २
तेरे अंदर साहिब जी रहते – २ उनसे करो मिलाप
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

१७ सार सब्द से मन को चीन्हों – आत्म को करो आज़ाद – २
अष्टम चक्र में ध्यान – २ लगा कर उतरो भव जल पार
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

१८ आत्म जोत परमपुरूष की – सतलोक ठिकाना है – २
जो आयें शरण सतगुरू की – सुरति में समाना है
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

१६ ये डौर सार सब्द की – पल में भव कर पार – २
दोनों मिल साथ में ईक संग – २ सिंधु में समाना है
अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

२० समाधि जब लग जाये तो – पल में प्रगटें आप – २
जोत तेरी संग साहिब के – २ जा पहुंचे निजधाम

अब टूटे ना ये बंधन – तेरे संग संग जाना है – २ तूं डौर ते –

तूं डौर ते पतंग मैं तेरे संग संग जाऊँगी – २
अब टूटे ना ये बंधन तेरे संग समाऊँगी – २ तूं डौर ते –

–0–

भजन २६

तेरे दर से मिली थी जो बातें – वही याद रही खुद भूल गये – २

१ ईक बार जो तेरे हो बैठे – २ सब अपनी खुदाई खो बैठे
अमृत की हुई जो बरसातें – वही याद रही खुद भूल गये – तेरे दर से –

२ तेरे हाथ से पी तूं साकी है – मदहोश हूं होश बाकी है – २
मेरे होश में हुईं जो बातें – वही याद रही खुद भूल गये – तेरे दर से –

३ तेरे नूर में मिल कर नूर हुए – बस तेरे ही मशकूर हुए – २
आँचल से तेरी जब लिपटे – तब तुम याद रहे खुद भूल गये – तेरे दर से –

तेरे दर से मिली थी जो बातें – वही याद रही खुद भूल गये – २

–0–

भजन (कबीर साहिब जी)

हम बसें चाम के धाम – हमें कोई क्या जाने – २
पशु पक्षी नर नाग जहां – लगे सभी चाम के साज – २ साहिब जी –

१ चाम चाम के दाम बटोरे – चाम रंग को राज – २
चाम चाम को परोसी जावे – चाम करे सो होई – २ साहिब जी –

२ चाम गावे चाम बजावे – चाम करावे नाच – २ साहिब जी –

३ कहे कबीर सुनो भाई साधो – हम हैं पूरे चमार – २ साहिब जी –

४ जो कोई हमको पहचाने – उतरे भवनिधि पार – २ साहिब जी –

५ जो गुरू खोजे – सो संत सुजाना – २
जो गुरू खोजी अमर घर जावे – पावे मूल ठिकाना – २ साहिब जी –

६ जिन सतगुरू पंच निरमाये – रचे ज़मीं अस्माना – २ साहिब जी –

७ तिन के कर्म कटे भव बंधन – जिन ओहि गुरू को जाना – २ साहिब जी –

८ टीका मूल बिन प्रगट कीन्ही – चौदहं कौटि जो जाना – २ साहिब जी –

६ नहीं बोल भाषा में आवे – सत्त सब्द सैन को जाना – २ साहिब जी –

१० आशा बंधते प्रगट किन्ही – जो जैसे अनुमाना – २ साहिब जी –

११ सार सब्द दियो है पुरूष ने – आप तो गुप्त समायो – २ साहिब जी –

१२ जिहिं पारस ते – संत जन करें आप समाना – २ साहिब जी –

१३ काम क्रौध मद्य लोभ बिसरे – मन बुद्धि चित्त संग – २
होवे वश अहंकार – २ साहिब जी –

१४ कहे कबीर ये अगम गुरू – सही छाप परवाना – २ साहिब जी –

हम बसें चाम के धाम – हमें कोई क्या जाने – २
पशु पक्षी नर नाग जहां – लगे सभी चाम के साज – २ साहिब जी –

–0–

भजन ३०

दातार मेरे प्यारे – बस तेरा ही है सहारा
नैया का मेरे सतगुरू – बस तूं ही है किनारा – २

१ करता हूं भूलें हर दम – बख़्शना तूं बख्शनहारे – २
मेहर ही मेहर करना – दुनियां के पालनहारे २
तेरे पास है मन मेरा – अब तूं ही है सहारा – नैया का मेरे –

२ झूठा ये कुलजहां है – झूठे हैं जहां वाले – २
धोखा ही धोखा हर जहां – फरेबी जहां वाले – २
सच्ची जो राह दिखाये – बस तेरा ही है द्वारा – नैया का मेरे –

३ चरणों में तेरे हरदम – रूले ज़िन्दगानी मेरी – २
हो कबूल जो गुज़ारिश – बड़ी मेहरबानी तेरी – २
बिन तेरे मेरे दाता – नहीं दास का गुज़ारा – नैया का मेरे –

४ जब से मिला हूं तुझसे – मुझे मिल गया जहां है – २
चरणों की धूल पाकर – सब कुछ ही पा गया हूं – २
तेरे हाथ डौर मेरी – बस तेरा ही है सहारा – नैया का मेरे –

दातार मेरे प्यारे – बस तेरा ही है सहारा
नैया का मेरे सतगुरू – बस तूं ही है किनारा – २

–0–

भजन ३१
अनमोल रतन

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

वे नाम ने सतपुरूष सूं दात है पाई,
जाके बल आत्म हंसा बन जाई।
ये मूल नाम सार सब्द कहाई,
लिखा ना जाई पड़ा ना जाई।
अक्का नाम वह दात कहलाई,
जाके बल हंसा निजघर जाई।
ता से पूर्ण मोक्ष हंसा पा जाई,
जन्म मरन की कैद मिट जाई।
बहुरि हंसा गर्भ वासा ना पाई,
सब हंसा संग रास रचाई।
अमर लोक बिन धरती पानी वासा पाई,
हर पल साहिब के दर्शन पाई।
यत्न सूं कोई ये दात ना पाई,
बिन सतगुरू कोई नांहि पाई ।

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

–0–

भजन ३२

निरालम्भ राम (चौथे राम/सतपुरूष) महिमां – १

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

१ तीन लोक से प्यारे राम, निरालम्भ राम जी – २ – जय राम –

२ चौथे लोक के प्यारे राम, न्यारे राम जी – २ – जय राम –

३ सत्तलोक के प्यारे राम, न्यारे राम जी – २ – जय राम –

४ तीन लोक से आगे रहते, अमरपुर में जी – २ – जय राम –

५ अमर लोक हंसों का प्यारा, न्यारा लोक रे – २ – जय राम –

६ सत्त लोक के वासी सारे, पड़े काल वस जी – २ – जय राम –

७ हर दम गाओ प्यारा नाम, प्यारा नाम जी – २ – जय राम –

८ तेरे अन्दर हर दम रहते, प्यारे राम जी – २ – जय राम –

६ स्वांस स्वांस में वासा राम जी, यह तुम जानो रे – २ – जय राम –

१० तुम भी बोलो मैं भी बोलूं, सारे बोलो रे – २ – जय राम –

११ राम भक्ति बिन नहीं निस्तारा, यह तुम जानो रे – २ – जय राम –

१२ सतगुरू भक्ति बिन नहीं पारा, यह तुम जानो रे – २ – जय राम –

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी

सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

—0—

भजन ३३

निरालम्भ राम (चौथे राम/सतपुरूष) महिमां – २

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

१२ बिन सत्तगुरू ना जानो राम जी, ना पाओ राम रे – २ – जय राम –

१३ सत्तगुरू भक्ति कर लो प्यारे, पा लो राम रे – २ – जय राम –

१४ पाओ राम गाओ राम, सुनो राम रे – २ – जय राम –

१५ अँग–सँग तेरे राम हैं रहते, जानो राम रे – २ – जय राम –

१६ रोम रोम साहिब ज्योत सरूपी, ऐसे राम रे – २ – जय राम –

१७ बिन मोल बिन तोले मिलते, सब कोई जाने रे – २ – जय राम –

१८ हँसा साहिब का अंश प्यारे, पाओ राम रे – २ – जय राम –

१६ मन की आँख सूं देख ना पाओ, सुरति में आँख रे – २ – जय राम –

२० सुरति सूं निरति जब मिलती, मूल सुरति बनती रे – २ – जय राम –

२१ मैं भी बोलूं तुम भी बोलो, सारे बोलो रे – २ – जय राम –

२२ सुरति निरति स्वांस में डालो, संग में सार नाम – २ – जय राम –

२३ बिन सुरति आत्म नहीं जगती, बिन आत्म नहीं राम – २ – जय राम –

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

—0—

भजन ३४

निरालम्भ राम (चौथे राम/सतपुरूष) महिमां – ३

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

२४ आशा–तृष्णा को तज डालो, पल में पा लो रे – २ – जय राम –

२५ हर कर्म फूल समान बनाओ, पल में पाओ रे – २ – जय राम –

२६ प्रेम को जानो प्रेम ही पाओ, प्रीत ही बांटो रे – २ – जय राम –

२७ सत्तपुरूष हैं प्रीत की ज्योति, यह तुम जानो रे – २ – जय राम –

२८ सार सब्द की दात को पा लो, उसी में राम रे – २ – जय राम –

२६ अंतिम क्षण में याद राम जब, हँसा हो जाओ रे – २ – जय राम –

३० आशा–तृष्णा खो जाएं जब, राम समाते रे – २ – जय राम –

३१ मन माया का संग गया तो, राम रह जाते रे – २ – जय राम –

३२ उपर राम नीचे राम, निरलम्भ राम जी – २ – जय राम –

३३ मन कारण सुरति नहीं जगती, बिन सुरति नहीं राम – २ – जय राम –

३४ आठों पहर सुरति में रहना, संग में प्यारा नाम – २ – जय राम –

जय राम जय राम जय राम जी, जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी, सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

भजन ३५
संदेश

हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के वासी ।।
काल जाल के वश में पड़ कर, भूल गये अविनाषी।
यह है काल जाल का फंदा, काटे कोई परमहंस प्यारा।
सार सब्द की सुरति देकर, सब को करे न्यारा।
सुरति से हो आत्म चेतन, तभी कटे ये बंधन सारा।
बंधन छूटे निजघर जाये, बन जाये हंस प्यारा।
परमहंस की शरणी आकर, पावे परमपुरूष प्यारा।
यही है परम मुक्ति पद, सार नाम रस सारा।
पर कोई कोई ये पावे, सतगुरू का प्यारा।
तूं तो निजधाम सतलोक, बेग़मपुर का वासी था।
मूल सुरति रूप तेरा, हंसा रूप निराला।
काल जाल में आकर फंस गया, और फिरे बेहाल ।
तीन पाँच पच्चिस का पिँझरा, जहां पर पड़ा वश काल।
चल हंसा सत्तलोक, छोड़ ये संसारा।
मिल पूर्ण सतगुरू सूं पाओ, हंसा रूप न्यारा।
जहां जाये फिर ना आये, मुक्त देस हमारा।
वो ही निजघर मुक्ति देस, बेग़म पुर प्यारा।
ग्याहरवें द्वार अष्ट्म चक्र से, जब हों प्राण निकासा।
सतगुरू संग परमपुरूष के लोक, पल में जा समाता।
बहुरि ना भवसागर आता, सुरति में जा समाता।
फिर वह मोती भौग लगाता, गर्भ कबहु ना आता।
हंस बन हंसों के संग संग, परमानंद पा जाता।
हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के हम वासी सारे ।।

संदेश वाहक
परमहंस सतगुरू श्री वे हूं जी

—0—

ईति श्री